उपन्यासोंका सचित्र मासिकपत्र।

वर्ष ५ } जनवरी १८१४ ईस्वी। { अङ्क १

"दारोगा दफ़र"के ग्राहकों, अनुग्राहकों, सहायकों, सह- योगियों और बन्धु-बान्धवोंसे छिपा नहीं है, कि हिन्दी दारोगा-दफ़रका एक मात्र उद्देश्य हिन्दी साहित्यके प्रधान अङ्ग "उपन्यास" की पूर्त्तिमें यथासाध्य सहायता देना है, और इसमें वह बहुत कुछ कृतकार्य्य भी हुआ है। विगत चार वर्षों में "दारोगा-दफ़र"में कितने ही उपन्यास प्रकाशित हुए हैं जिनमें अधिकांश भावपूर्ण, शिक्षाप्रद और अनूठे हैं।

"दारोगा-दफ़र"में प्रायः जासूसी ढंगके सचित्र उपन्यास निकालनेकी चेष्टा की गई है, क्योंकि इस प्रकारके उपन्यासोंसे सर्व्व साधारणको खूनी, चोर, बदमाश, उठाईगीरे, जूआचोर और अन्य प्रकारके दुष्टोंसे बचने और उन्हें पहचाननेकी पूरी शिक्षा मिलती है, भोलेभाले भाई ठग और धूर्तों से बचने आन- मालका बचानेमें समर्थ होते हैं। इन उपन्यासोंसे सबप्रकारके सांसारिक रहस्योंकी अभिज्ञता प्राप्त होती है और मनुष्य कम खर्च और थोड़े समयमें अधिक अनुभव प्राप्त कर लेता है।

"दारोगा-दफ़र"से 'पुलिस-विभाग'के कर्मचारियोंका भी बहुत बड़ा उपकार हुआ है। "दारोगा-दफ़र"के उपन्यासोंकी घटनाओंसे अनुभव प्राप्तकर कितने ही कर्मचारियोंने बड़े बड़े संगीन मामलोंमें सफलता प्राप्त की है। मध्यप्रदेश, युक्तप्रदेश पञ्जाब और राजपूतानेके सैकड़ों पुलिस कर्मचारी "दारोगा- दफ़र"के पक्के पाठक हैं। "दारोगा-दफ़र"में यथासाध्य इस ढङ्गके उपन्यास ही प्रति मास प्रकाशित होते हैं, जिनसे स्त्री, पुरुष,

बूढ़ा, बच्चा, धनी, निर्धन सब ही का मनोरञ्जन हो और स
इनके द्वारा कुछ शिक्षा प्राप्त कर सकें ।

परमात्माकी प्रेरणा और ग्राहकों, अनुग्राहकोंकी कृपा
"दारोगा-दफ़्तर" का अपना निजका एक बहुत बड़ा प्रेस
गया है ! यही कारण है, कि आज आप अपने कृपाप
"दारोगा-दफ़्तर"को इस उन्नत अवस्थामें देख रहे हैं । य
ग्राहकोंकी बराबर ऐसी ही कृपा रही, तो भविष्यतमें यह द
हिन्दी-संसारमें अपने ढंगका अनूठा मासिकपत्र गिना जायग

इस वर्ष "दारोगा-दफ़्तर"में अपने आकार-प्रकार, रङ्ग-ढ
और छपाई सफाईमें अवश्य खर्च बढ़ाया है, परन्तु वार्षि
मूल्य वही २) रखा है । इसका प्रधान कारण यही है, ि
"दारोगा-दफ़्तर" अपने ग्राहकोंको अल्प मूल्यमें अधिक मूल्य
पुस्तकें देना चाहता है । अर्थात २) देकर इस वर्ष जो सज्ज
"दारोगा-दफ़्तर"के ग्राहक बनेंगे, उन्हें लगभग ४) मूल्य
पुस्तकें "दारोगा-दफ़्तर"से मिलेंगी । पर बिना ग्राहकोंक
सहायताके "दारोगा-दफ़्तर"का यह सत्साहस चिरस्थायी हो
सम्भव नहीं, कारण आयसे अधिक व्यय बड़े बड़े राजे, मह
राजोंको भी चौपट कर डालता है । अतएव "दारोगा-दफ़्त
अपने प्रिय ग्राहकोंसे केवल एक सहायता चाहता है । व
यह है, कि "दारोगा-दफ़्तर"के प्रत्येक ग्राहक अपने बन्ध
बान्धवों और इष्ट-मित्रोंसे "दारोगा-दफ़्तर"के ग्राहक बनने
अनुरोध करें । यदि "दारोगा-दफ़्तर"के कुल ग्राहक, अनुग्राह

कमसे कम एक एक ग्राहक भी बढ़ा देंगे, तो "दारोगा-दफ़र"का बड़ा भारी उपकार साधन होगा और भविष्यमें "दारोगा-दफ़र" उसी मूल्यमें अपने ग्राहकोंका और भी मनोरञ्जन कर सकेगा। आशा है "दारोगा-दफ़र"के माननीय ग्राहकवृन्द उसकी विनीत प्रार्थनापर ध्यान देंगे।

दाराका अधःपतन।

(ऐतिहासिक वृत्तान्त)

दाराका इतिहास पाठकोंसे छिपा नहीं है। दारा सम्राट् शाहजहांके जेष्ट पुत्र, सिंहासनके भावी उत्तराधिकारी, आदरकी सामग्री और सौभाग्यका सितारा थे। उनके प्रथम जीवनकी सौभाग्य-सूचनाका प्रारम्भ देख लोग अनुमान करते, दारा ही भारतेश्वर होंगे; परन्तु वह नहीं हुआ। दाराका अन्तिम जीवन बड़ा ही दुर्भाग्यमय, जीवनके शेषार्द्ध भागकी कहानी बड़ी ही शोचनीय है! उसके पढ़नेसे हृदय विदीर्ण होता है—आंखें डबडबा आती हैं। वह उपन्यासकी घटनाकी भांति बड़ा ही विचित्रता पूर्ण है। इस प्रबन्धके साथ पाठक जितना आगे बढ़ेंगे, विचित्रता उतनी ही उनकी दृष्टिगोचर होगी।

यदि औरङ्गजेबके बदले दारा दिल्लीके सम्राट् होते, तो शायद अकबर शाहका बड़े यत्नसे प्रतिष्ठित "मुगलसाम्राज्य"* इतना शीघ्र अवनतिके पथपर अग्रसर न होता; इसके अतिरिक्त औरङ्गजेबका नाम मुगलराजाओंके इतिहासमें इतना उज्ज्वल होकर रहता या नहीं, इसमें विशेष सन्देह होता।

ईश्वरकी कृपासे दारा बहुतेरे सद्गुणोंसे पूर्ण थे। मुगल-सम्राट्के जेष्ट पुत्र,—सुविशाल हिन्दुस्थानके सिंहासनके अधिकारी होनेके लिये जितने गुणोंका होना आवश्यक है, वे सब उनमें कूट कूटकर भरे थे। जीवोंके प्रति ममता, स्वजनोंसे प्रीति, पत्नीसे प्रेम, पुत्रोंसे मोह, पक्षपात शून्य और अकपट पितृभक्ति सब ही उनमें वर्त्तमान थी। हिन्दुओंका, हिन्दुओंके धर्मको वे बड़ी भक्ति और श्रद्धाकी दृष्टिसे देखते थे। औरङ्गजेब विद्वेष और कुटिलताके वशवर्त्ती होकर उनपर विधर्मी आदि अनेक प्रकारके दोषारोपण कर गये हैं। ऐसा करनेमें उनका विशेष स्वार्थ था; और इसी स्वार्थके कारण ही औरंगजेबने बड़े भाई दाराका खूनसे लथपथ कटा-सिर अपने हाथमें लेकर बार बार उसकी परीक्षा की थी!

दारा सर्वगुणसम्पन्न ही थे, यह बात हम नहीं कहते। मनुष्य मात्रमें ही दोष गुण दोनों होते हैं। दारामें भी यही था; किन्तु साधारण व्यक्तियोंमें जो सब दोष रहनेसे किसी

---

* "मुगल साम्राज्य" [illegible] हमारे यहां [illegible] है। [illegible] [illegible] है। [illegible] है।

प्रकारकी विशेष हानि नहीं होती, वे सब दोष सिंहासनाभि लाषी सम्राट-तनयके लिये बड़े अनिष्ट कारक हैं। इनही दोषोंके कारण ही दाराको युद्धमें पराजय, राज्य-च्युति और अति शोचनीय मृत्यु संगठित हुई थी।

सम्राट् शाहजहांके चारों पुत्र ही एक माताके गर्भजात थे। सम्राट् अपने पुत्रोंको अच्छीतरह पहचानते थे। उनमें प्रत्येकके चरित्रपर उन्होंने गम्भीरतापूर्वक विचारकर जाना था, कि यदि भविष्यत्में किसीके द्वारा महाविप्लव उपस्थित होना सम्भव है, तो वह औरङ्गजेब हीके द्वारा होगा। औरङ्गजेबके कपट धर्म्म-भावका सुदृढ़ आवरन भेदकर उन्होंने मनबहुत देखा था,—उसी संसार विरागप्रवृत्तिके अन्दर स्वार्थ-सिद्धिकी दारुण वासना बहुत ही गुप्त भावसे धीरे धीरे विपुल शक्ति सञ्चार कर रही है। उपयुक्त अवसर देख वही गुप्त शक्ति महाप्रलय उपस्थित करेगी। यही कारण था, कि सम्राट् शाहजहांने कूटबुद्धि औरङ्गजेबको सदाके लिये आगरेसे दूर दक्षिणका शासन भार देकर आंखोंकी ओट कर रखा था। शुजा और मुरादको अलगकर बङ्गाल और गुजरातका शासक नियुक्त किया था और अपने प्राणोंसे प्रिय पुत्र दाराको आगरेमें या बादशाहके रूपमें अपने पास ही रखा था।

शाहजहां स्पष्ट शब्दोंमें कहते,—"दारा मेरा ज्येष्ठ पुत्र है सिंहासनपर न्यायतः उसका ही स्वत्व है। मेरी मृत्युके बाद दारा ही दिल्लीके सिंहासनपर बैठेगा।" इससे और सभी

प्रकारकी विशेष हानि नहीं होती, वे सब दोष सिंहासनाभिलाषी सम्राट-तनयके लिये बड़े अनिष्ट कारक हैं। इन सब दोषोंके कारण ही दाराकी युद्धमें पराजय, राज्य-च्युति और अति शोचनीय मृत्यु संगठित हुई थी।

सम्राट् शाहजहांके चारों पुत्र ही एक माताके गर्भजात थे। सम्राट् अपने पुत्रोंको अच्छीतरह पहचानते थे। उनमें प्रत्येकके चरित्रपर उन्होंने गम्भीरतापूर्वक विचारकर जाना था, कि यदि भविष्यत्में किसीके द्वारा महाविप्लव उपस्थित होना सम्भव है, तो वह औरङ्गजेब हीके द्वारा होगा। औरङ्गजेबके कपट धर्म्म-भावका सुदृढ़ आवरन भेदकर उन्होंने मनचक्षुसे देखा था,—उसी संसार विरागप्रवृत्तिके अन्दर स्वार्थ-सिद्धिकी दारुण वासना बहुत ही गुप्त भावसे धीरे धीरे विपुल शक्ति सञ्चार कर रही है। उपयुक्त अवसर देख वही गुप्त शक्ति महाप्रलय उपस्थित करेगी। यही कारण था, कि सम्राट् शाहजहांने कूटबुद्धि औरङ्गजेबको सदाके लिये आगरेसे सुदूर दक्षिणका शासन भार देकर आंखोंकी ओट कर रखा था। शुजा और मुरादको क्रमशः बङ्गाल और गुजरातका शासक नियुक्त किया था और अपने प्राणोंसे प्रिय पुत्र दाराको आंखोंपर या बादशाहके रूपमें अपने पास ही रखा था।

शाहजहां स्पष्ट शब्दोंमें कहते,—"दारा मेरा ज्येष्ठ पुत्र है। सिंहासनपर न्यायतः उसीका ही स्वत्व है। मेरी मृत्युके बाद दारा ही दिल्लीके सिंहासनपर बैठेगा।" उसके और लोगों

पुत्र यह बात न जानते हों, ऐसा नहीं था। दाराको सम्राट्ने कभी आँखोंकी ओट नहीं किया। भविष्यत्में राज राजेश्वर होकर दारा जिसमें सुचारुरूपसे राजकार्य्य चला सकें, उसके उपयुक्त व्यवहारिक शिक्षादानके लिये ही वे दाराको सदा अपने पास रखते—पढ़ा समझाकर उनको राष्ट्र-विभागके सब कामोंमें निपुण करते। बहुत दिनोंसे ही यह व्यवस्था चली आती थी। इलाहाबाद, पञ्जाब, मुलतान प्रभृति शान्तिमय, विद्रोहशून्य प्रदेशोंका शासनभार उन्होंने कई बार दाराको दिया था सही, पर दारा अनेक समय अपने प्रतिनिधि द्वारा ही इन सब प्रदेशोंका शासन करते और अपना अधिकांश समय पिताकी सेवामें ही लगा देते।

सम्राट्ने अपने प्रिय पुत्र दाराको "शाहबुलन्द इकबाल" की उपाधिसे विभूषित किया था। यह साम्राज्यकी सर्व्व-श्रेष्ठ उपाधि है; इसका भावार्थ है, "अतुल धनेश्वर।" यह उपाधि इसके पहले या पीछे किसीको नहीं मिली।

दारा चालीस हजार अश्वारोही सेनाके सेनानायक थे, पीछे उन्नत होकर साठ हजार अश्वारोहियोंके अधिनायक हुए। यह सौभाग्य और किसी राजकुमारको प्राप्त नहीं हुआ। पदोचित् गौरव-रक्षाके उपयुक्त बहुतसा धन और जागीर भी उन्हें मिली थी। "दीवान-ए-आम" या "दीवान-ए-खास" में जब प्रकाश्य दर्बार लगता, दारा सम्राट्के "तख्त-ए-ताऊस" के पास स्वर्ण निर्मित रत्नराजिशोभित एक छोटे

सिंहासन पर बैठते। सम्राट्के आदेश और इच्छाके अनुसार ही इस प्रकारकी शासनकी व्यवस्था हुई थी। और किसी सम्राट्-पुत्रके भाग्यमें इस प्रकारका सम्मान नहीं घटा! दाराके पुत्रगण सम्राट्के अन्यान्य पुत्रोंकी भांति समान पद-गौरवके सेना नायक थे। दारा सम्राट्के सर्व्व श्रेष्ठ सेना-पति थे। उनका वेतन भी उनके पद-मर्यादाके अनुसार—दो करोड़ रुपया—था।

राजदर्बारमें दाराकी सहायता बिना कोई कार्य्य करनेकी सामर्थ्य किसीको न थी। सम्भ्रान्त अमीर-उमरा हों,—उच्च पदस्थ सेनापति हों,—सामन्त राजा हों,—या सम्राट्के बड़ेसे बड़े कृपा पात्र हों; सबको ही पहले युवराज दाराके 'अरज' करनी पड़ती थी। जो लोग राजदर्बारमें उच्च पद प्रार्थी, अथवा अपराध जनित भीषण दण्ड भयसे कातर हो उन सबको ही दाराकी सहायता लेनी पड़ती—ऐसा न करनेसे वे सम्राट्के पास पहुंच न सकते। जो लोग दारा[illegible] मध्यस्थतामें सम्राट्के पास पहुंचते, सम्राट् उन लोगोंको पु[illegible] दाराके पास अन्तिम आज्ञाके लिये भेज देते। यह घटना दे[illegible] कर बहुतोंको यह विश्वास हो गया था, कि दाराको [illegible] रखनेमें ही उनकी मनोवाञ्छा सिद्ध होगी। इस कारण दारा का[illegible] दर्बारमें वादी, प्रतिवादी, राजा-महाराजके [illegible] परिमाणमें धन-रत्न, हाथी और घोड़े भेंट-स्वरूप प्राप्त[illegible]

[illegible] सम्राट् शाहजहां [illegible] प्रबल [illegible]

कर ली थी, यह जीवनखांकी घटनासे प्रमाणित होती है। जीवनखां आज्ञा न मानने और विद्रोहके अपराधमें सम्राट्की आज्ञासे घोर दण्डसे दण्डित हुआ। सम्राट्ने हुक्म दिया,—"हाथीके पैरों तले कुचलकर इस हतभाग्यका प्राण नाश करो।" जीवनखां सम्राट्की आज्ञानुसार रस्सियोंसे जकड़ा जमीन पर पड़ा था। महावत हाथीको अङ्कुशाघात करनेपर उद्यत ही था, इसी समय दाराने सम्राट्से करजोड़ कर जीवनखांकी प्राणभिक्षा मांगी—दाराकी प्रार्थना उसी समय स्वीकृत हुई। जीवनखां छोड़ दिया गया। *

अनेक समय दर्बारमें प्रकाश्य भावसे सम्राट् दाराका परामर्श लेकर राज-कार्य्यका निर्वाह करते और कभी कभी दारा स्वाधीन भावसे अपनी इच्छाके अनुसार कार्य्य कर स्वलिखित आज्ञा-पत्र पर सम्राट्की "सीलमोहर" छाप देते। दाराके इस-प्रकारके आज्ञा-पत्र आदि सम्राटके आज्ञा-पत्रके रूपमें ही सर्वमान्य होते। शाहजहांके ऐसा करनेका प्रधान कारण यही था, कि सर्वसाधारण दाराको अपना भावी सम्राट् समझें।

धार्म्मिक विचारके सम्बन्धमें दारा सम्राट् अकबरके पदावलम्बी थे। हिन्दू, मुसल्मान, क्रस्तान प्रभृति सब जातिके धार्म्मिक ग्रन्थोंकी आलोचना वे निरपेक्ष भावसे किया

* भविष्यमें शाहजहांके बहुत दिनोंके इसी [illegible] जीवनखांके द्वारा दारा [illegible] औरङ्गजेबके हाथमें [illegible] गये।

करते थे। अवश्य अकबर बादशाहके चलाये "दीन-इलाही"की भांति नवीन धर्म-प्रचार करनेका विचार उनका नहीं था, परन्तु सब शास्त्रोंका सत्यानुसन्धान कर धर्म और नीतिका तथ्याविष्कार करना ही उनका प्रधान उद्देश्य था। हिन्दुओंका वेदान्त, मुसलमानोंका कुरान, क्रिस्तानोंका बाइबिल प्रभृति सब जातीय धर्म-शास्त्रोंकी उन्होंने बड़े गम्भीर भावसे आलोचना की थी। वे जिस समय इलाहाबादके शासनकर्त्ता थे, उस समय काशीसे एक बड़े विद्वान पण्डितको बुलवाकर उनकी सहायतासे उन्होंने "उपनिषद" का सुन्दर फारसी अनुवाद किया था और स्वयम् उसकी भूमिका लिखी थी।

दाराके इस उपनिषदका अनुवाद-ग्रन्थ "सिराज-उल्-इसरार" नामसे प्रसिद्ध हुआ। सन १६५७ ईस्वीके जुलाई महीनेमें यह अनुवाद समाप्त हुआ। उनका "मजमा-उल्-बहरैन" भी हिन्दू-शास्त्र विषयक ग्रन्थ है। इसका अर्थ है,—"दो समुद्रोंका मिलन" हिन्दू और मुसलमान-धर्मका सारसत्य समन्वय-साधन ही इस ग्रन्थका उद्देश्य है। "सफीनात-उल-औलिया" नामक ग्रन्थ भी उन्हींका लिखा है। इस ग्रन्थमें मुसलमान सिद्ध फकीरोंके जीवन-वृत्तान्त सङ्कलित हैं। इसके अतिरिक्त "साकिनात-उल्-औलिया" नामक उनकी लेखनीसे निकली हुई और एक धर्म-जीवनी है। इस ग्रन्थमें "मीयांमीर" नामक एक सिद्ध फकीरकी जीवनी लिपिबद्ध हुई

थी।" दाराके खास सेनादलमें अनेक राजपूत अधिनायक थे। अकबरकी भांति मुसलमानोंकी अपेक्षा हिन्दुओंपर वे अधिक विश्वास करते। कई यूरोपीय इंजीनियर और गोलन्दाज भी दाराकी सेनामें नियुक्त हुए थे। दारा अनेक समय ब्राह्मण और वेदोंसे घिरे रहते। इन सब ब्राह्मण सभासदोंको वे नियमित वृत्ति भी प्रदान करते थे।

(शेष आगे)

हरिसाधन मुखोपाध्याय।

विचित्र वार्ता।

ऐशियाई रशिया (रूस) के सीमान्तप्रदेशमें मेवारो नामक एक नगर है। उसमें केवल मर्द ही वास करते हैं, स्त्री एक भी नहीं दिखाई देती। क्या सब योगी हैं?

* *
*

आजकल कागजकी कटत खूब है। इसलिये कागज तयार करनेके उपादान भी नये नये आविष्कार किये जाते हैं। फ्रांस देशके प्रोफेसर अपताल कहते हैं, कि अङ्गूरकी लता

बहुत उमदा कागज बन सकता है। उनका कहना है, कि पहूरकी लताको आगपर चढ़ाकर एसिडके जरिये गला लेनेसे उसके रेशे गल जाते हैं और एक किस्मके भूरे रंगका मसाला तय्यार हो जाता है, फिर उसे साफ करके कागज बनानेसे बहुत उमदा कागज तय्यार हो जाता है। इस कामके लिये दक्षिण-प्रान्तमें एक कम्पनी पन्द्रह मिलें खोलनेवाली है। प्रत्येक मिलमें प्रति दिन चार टन मसाला तय्यार होगा।

° °
°

लीजिये, चोर पकड़नेका मसाला भी तय्यार हो गया। अब सहज ही चोर पकड़ लिये जायगे। इस मसालेके तय्यार करनेवाले एक फ्रान्सीसी डाक्टर हैं। वे कहते हैं कि आयोडाइनके सफूफको कमरे, दालान वगैरहमें जहां चाहो छिड़क दो। फिर उसे नम करनेके लिये एमोनिया छिड़क दो। यह भाफ होकर उड़ जायगी। उसके उड़ जानेके बाद जमीनपर एक नई चीज 'आयोडाइन नाइट्राइट' तय्यार होकर रह जायगी। उसपर पैर पड़ते ही पटाखे जैसी आवाज होगी। उस आवाजसे लोगोंकी नींद टूट जायगी और चोर रास्ते गिरफ्तार हो जायेंगे।

° °
°

आसाममें चूहोंकी टोली बहुत होती है और चूहे इस खेतीको बहुत नुकसान पहुंचाते हैं, इसलिये इटालके इस

बातकी चेष्टा कर रहे हैं, कि ओले पड़ने ही न पावें। न ओले गिरेंगे, न खेती बरबाद होगी। इसके लिये इन लोगोंने एक तरहकी बिजलीकी कल बनाई है। यह कल सौ फुट लम्बे खम्भेपर लगा दी जाती है, पर इसका सम्बन्ध पृथ्वीसे भी रहता है। इस अद्भुत कलके प्रतापसे ओले बनने ही न पावेंगे और अगर कुछ बने भी, तो जहां यह कल रहेगी उस जगह और उसके आस-पास कोसोंतक कभी गिर ही न सकेंगे! अङ्गूरके खेतोंके पास इस कलको लगा देनेसे अङ्गूरकी खेती ओलों द्वारा चौपट होनेसे बच जायगी। अभी इस विचित्र कलकी जांच हो रही है।

* *

*

ईश्वरकी लीला अपार है। इस संसाररूपी चिड़ियाखानेमें अद्भुत अद्भुत जीव भरे हुए हैं और नित्य पैदा भी होते जाते हैं। अमेरिकाकी एक बड़ी ही विचित्र बात सुननेमें आई है। वहांके किसी स्त्रीने एक बार गर्भ रहा। यह देख दम्पतीको परमानन्द हुआ। इन लोगोंने आपसमें परामर्श किया, कि यदि परमेश्वरकी कृपासे हमलोगोंको [illegible] देखनेका सौभाग्य प्राप्त होगा, तो हमलोग इसका नाम 'लाल कमल' रखेंगे। आखिर दिन पूरे होनेपर [illegible], सब पड़ोसी तथा कुटुम्ब [illegible] देखनेका अपार आनन्द प्राप्त हुआ। ईश्वरकी माया,—एक बच्चेके दाहिनी बांह (J) और बाईंमें (D) अक्षर साफ दिखाई पड़ने लगे।

ंगली रखकर ज़ोरसे सीटी बजाई। इसके बाद तुरत ही क विचित्र दृश्य देखनेमें आया। थियेटरके परदेकी तरह ह कुण्ड धीरे धीरे ऊपर उठने लगा !

यह तिलस्मात देखकर जासूस नरेन्द्रको बहुत ताज्जुब हुआ। उसने विमनियोंके अन्दरकी कितनी राहें देखी थीं, छोटे तहखाने देखे थे और भी कितनी अद्भुत-अद्भुत चीजें देखी थीं, पर यह सबसे विचित्र था। वह कुण्ड इस ढङ्गसे बनाया गया था, कि बत्तपर मतह-दीवार वगैरह सहित वह दो फुट चौड़ा कुण्ड एकादम ऊपर उठ आता था। कुण्डके ऊपर उठ आनेपर नीचे गोल सीढ़ियोंका सिलसिला देखपड़ा।

अब आगे आगे सुरागिया और पीछे पीछे नरेन्द्र उस सीढ़ीसे उतरने लगे। नीचे पहुंचनेपर एक सुरङ्ग मिली। उसमें सांपकी तरह रेंगकर जाना पड़ता था।

नरेन्द्र जवांमर्द और साहसी मनुष्य था। रेंगते रेंगते उसे मालूम हुआ, कि इसमें तो जानकी जोखिम है। जैसे जैसे वह आगे जाता था वैसे ही वैसे सुरङ्ग छोटी होती जाती थी। आखिर एक जगह जाकर नरेन्द्र अटक गया; अब न तो वह आगे ही बढ़ सकता था और न पीछे ही लौट सकता था। पानीके नलमें मछलीकी तरह फंस गया। बहुत कोशिश करनेपर भी जब वह उससे अलग न हो सका, तब उसने सुरागियाको पुकारकर कहा,—"मैं फंस गया हूं। मेरा हाथ पकड़कर खींच लो।" पर वहां सुनता कौन था? अब

कुछ भी जवाब न मिला, तब नव नरेन्द्रने मन ही मन झुंझलाकर कहा,—"मैं तो अच्छी बलामें आकर फंस गया। अब या तो दम घुट जायगा, नहीं तो भूखों मरूंगा।" यह खयाल उठते ही उसके प्राण सूख गये। थोड़ी देर ठहरकर उसने फिर पुकारा,—"भाई! मैं फंस गया हूं, थोड़ी मदद कर दो। मैं तुम्हारी सुरङ्गके लिये बहुत मोटा हूं अथवा यों कहो, कि तुम्हारी सुरङ्ग ही मेरे लिये बहुत छोटी है।" जब इसका भी कुछ जवाब न मिला तब उसने मन ही मन कहा, कि चाहे जैसे हो इससे निकलना ही चाहिये।

उसके जेबमें छुरा था। उसने सोचा, कि अगर छुरा मिल जाय, तो इधर उधर थोड़ा खोदकर राह बना लूं, पर [illegible] मोम! उसके दोनों हाथ आगे पसरे हुये थे और वह इस [illegible] जकड़ गया था, कि हाथको घुमाकर जेब तक न ला सकता था। अब उसके पेशानीपर बूंद-बूंद पसीना निकल आया, उसे मालूम हो गया, कि बड़ी भारी विपदमें फंस गया है। उसका दम घुटना शुरू हो गया था और निराश भी हो [illegible] था; इतनेमें उसके कानमें यह आवाज पड़ी,—"वाह! [illegible] वहां क्या कर रहे हो? बाहर क्यों नहीं आते?"

इसपर नरेन्द्रने कहा,—"मैं तो इसमें इस तरह फंस गया हूं जैसे पानीके भंवरमें मछली।"

इतना सुनते ही सुरङ्गवालेने उसका हाथ पकड़कर खींचा

कमरेके अन्दर जाकर नरेन्द्रने देखा, कि कई लैम्प जल रहे हैं और दस बारह जवान कुरसियोंपर सुखसे बैठे हुए तम्बाकू और शराब पी रहे हैं। सुरागियाने उसे बैठनेका इशारा किया। वह भी निधड़क एक कुरसीपर बैठ गया, मानो बदमाश-लुटेरोंके बदले दोस्तोंकी मजलिसमें पहुंच गया हो। बैठकर उसने एकबार अच्छी तरह चारों ओर देखा, पर माधो और रामूको न पाया, जिनके पीछे वह अपने भायी सुरेन्द्रके साथ लगा हुआ था। अब उसने खयाल किया, कि अगर इसी दलमें वे दोनों हैं, तो इस वक्त कहीं गये हैं। पर अगर ऐसा ही है, तो दीवारपर जिसकी छाया पड़ी थी और जिसने दरवाजा खोलकर सड़कपर मुझे गोली मारी थी, वह कौन था? उन दोनोंके सिवाय और किसीके मुझपर गोली चलानेका मतलब?

नरेन्द्र यह सोच ही रहा था, कि एक आदमीने खड़े होकर टेबिलपर जोरसे हाथ दे मारा, जिसके साथ ही कमरेमें सन्नाटा छा गया।

देखनेमें वह आदमी सुन्दर और रोबीला था, उसकी आंखें तीखी, तथा सिर और मूछके बाल भूरे थे। उसे देखनेसे ऐसा मालूम होता था मानो वह किसी फौजका सिपाही हो। वह बुद्धिमान भी मालूम होता था और जब वह खड़ा होकर बोला, तो ऐसा ज्ञान पड़ा, कि वह कुछ पढ़ा-लिखा भी था।

पड़ा पाया।"

इतना कहकर सुरंगिया चन्द्रकान्तसे कहा। नरे-
उसके पीछे पीछे चला। ऐसी देखकर सुरङ्ग बनानेके लि-
नरेन्द्र उन बदमाशोंकी मन ही मन तारीफ करता जा-
था। कुछ दूर जाकर सुरंगिया ठहर गया और वहाँ
धीरेसे सीटी बजाई। तुरत ही एक दरवाजा खुल गया
अन्दरकी सजावट देखकर नरेन्द्रको बड़ा ताज्जुब हुआ
और विशेष आश्चर्य तो इस बातपर हुआ, कि पातालमें इ-
लोगोंको हवा कैसे मिलती है!

नरेन्द्रको चाहे ताज्जुब हो, पर उन बदमाशोंको सुरंग-
हमेशा ठण्डी ताजी हवा मिलती थी। हवाके आने जानेके
लिये गुप्त रास्ते बना रखे गये थे।

कमरेके अन्दर जाकर नरेन्द्रने देखा, कि कई लैम्प जल रहे हैं और दस बारह जवान कुरसियोंपर सुखसे बैठे हुए तम्बाकू और शराब पी रहे हैं। सुरागियाने उसे बैठनेका इशारा किया। वह भी निधड़क एक कुरसीपर बैठ गया, मानो बदमाश-लुटेरोंके बदले दोस्तोंकी मजलिसमें पहुंच गया हो। बैठकर उसने एकबार अच्छी तरह चारों ओर देखा, पर माधो और रामूको न पाया, जिनके पीछे वह अपने साथी सुरेन्द्रके साथ लगा हुआ था। अब उसने खयाल किया, कि अगर इसी दलमें वे दोनों हैं, तो इस वक्त कहीं गये हैं। पर अगर ऐसा ही है, तो दीवारपर जिसकी छाया पड़ी थी और जिसने दरवाजा खोलकर सड़क-पर मुझे गोली मारी थी, वह कौन था? उन दोनोंके सिवाय और किसीके मुझपर गोली चलानेका मतलब?

नरेन्द्र यह सोच ही रहा था, कि एक आदमीने खड़े होकर टेबिलपर जोरसे हाथ दे मारा, जिसके साथ ही कमरेमें सन्नाटा छा गया।

देखनेमें वह आदमी सुन्दर और रोबीला था, उसकी आँखें तीखी, तथा सिर और मूछके बाल भूरे थे। उसे देखनेसे ऐसा मालूम होता था मानो वह किसी फौजका सिपाही हो। वह बुद्धिमान भी मालूम होता था और जब वह खड़ा होकर बोला, तो ऐसा जान पड़ा, कि वह कुछ पढ़ा-लिखा भी था।

नरेन्द्रको यह मालूम करनेमें भी काम पड़ा, क्योंकि नरेन्द्र प्राय: सब बदमाशोंको पहचानता था; कुछ को तो अपनी आंखों देखकर और कुछको उनके फोटोसे।

अब उस सरदारने कहा,—"भाइयो! एक सज्जन हम लोगोंके दलमें शामिल होनेका उम्मीदवार है।"

इसपर एक आदमीने पूछा,—"वह कौन है?"

सरदार,—"सुरागिया उसे लाया है और वही उसका हाल बयान कर सकता है।"

इसपर सुरागियाने खड़े होकर नरेन्द्रके आने और दलमें भर्त्ती होनेका सारा हाल कह सुनाया। इसके बाद कुछ देरतक सब चुपचाप बैठे रहे; फिर एक आदमीने कहा,—"मुझसे शेरासे बराबर मुलाकात हुआ करती थी।"

सुरागिया,—"कहां?"

आदमी,—"अलीपुरमें। वह गुप्त-सभाका एक मेम्बर था।"

सुरागिया,—"अच्छा, उम्मीदवार हाजिर है और आपके सवालोंका जवाब वह खुद देगा।"

इधर नरेन्द्र शेराको जानता भी न था। सिर्फ अपने बड़े सुरेन्द्रसे उसका नाम और कुछ हाल सुन लिया था। एकाएक उसने अपना नाम शेरा बता दिया था। अब उसे अच्छी तरह मालूम हो गया, कि विपद सामने है! पर इससे वह जरा भी न घबराया, बल्कि हिम्मत बांधे शान्त और स्थिर बैठा रहा। कितने ही आदमी ऐसी दशामें घबरा

उठते और समझ लेते हैं, कि अब जान गई, पर बहादुर नरेन्द्र ऐसा आदमी न था ; एकबार वह मौतसे भी मुका-बिला करनेवाला सख्स था। उसने देखा, कि अब काम करनेका वक्त है चुपचाप बैठ रहनेका नहीं। बस वह आगे बढ़ा और बोला,—"मैं शेरा हूं और बड़ी खुशीके साथ उस आदमीसे मिलना चाहता हूं, जो अलीपुरमें मेरे साथ कार्रवाई करता था।"

अब वह आदमी, जिसने शेराके जाननेकी बात कही थी, नरेन्द्रके पास आया और बोला,—"एकबार अपना चेहरा तो मुझे अच्छी तरह देखने दो। हम दोनों आदमी तो पुराने दोस्त हैं।"

नरेन्द्र उस आदमीकी आंखसे आंख भिड़ाये डटा खड़ा रहा। कुछ देरतक उसे अच्छी तरह देख-भाल लेनेपर वह जाकर अपनी जगहपर बैठ गया और बोला,—"अब मुझे कुछ भी नहीं कहना। मेरा काम हो गया।"

तीसरा परिच्छेद।

भयानक परीक्षा।

शेराको अच्छी तरह देखकर लौटनेके बाद उस आदमीने ो कुछ कहा, उसका मतलब यह था,—"मैंने कभी इस ादमीको नहीं देखा; यह शेरा नहीं है।"

भयानक परीक्षाका समय उपस्थित था। थोड़ी देरतक ब चुपचाप बैठे रहे, पर नरेन्द्र भीतर ही भीतर उपाय सोच हा था। जो आदमी देखने आया था, उसे वह भी न पह- चानता था। पर उसने अपने साथी सुरेन्द्रसे सिर्फ यह सुना था, कि अलीपुरका एक बदमाश उस दिन इधर शहरमें देख पड़ा था। अब नरेन्द्रको केवल अपनी बुद्धिका भरोसा रह गया।

सरदार,—"क्यों, जालिम! तुम इसे पहचानते हो?"

जालिम,—"मैंने इसे पहले कभी नहीं देखा। यह शेरा नहीं है।"

इतना सुनते ही सबके सब डाकू अपना अपना छुरा और पिस्तौल निकालकर कुछ बड़बड़ाने लगे। उस समय यही मालूम होता था, कि नरेन्द्रको उनकी चालबाजीका फल लिना चाहता है। इसी समय सरदारने कहा,—"शेरा! अब क्या कहते हो?"

शे०,—"जालिम सरासर झूठ बोलता है।"

लमें आ मिला था। अगर इस दलवाले उसको बेइमानीका हाल जान लेते, तो उसे उसी वक्त खत्म कर देते।

सरदार,—"अगर किसीको कोई उज्र न हो तो इसे दलमें मिला लेना चाहिये।"

किसीने कोई आपत्ति न की, पर सबको ऐसा मालूम था, कि दालमें कुछ काला है। इतनेमें एक आदमीने उठकर कहा,—"इस आदमीको अपने दलमें मिलानेमें मुझे कुछ उज्र है।"

सरदार,—"क्या उज्र है?"

आदमी,—"यह गलत पेश बदलकर हम लोगोंको गिरफ्तार करने आया है।"

इतना सुनते ही नरेन्द्र कांप उठा, पर बाहरसे शान्त और स्थिर रहा। वह पहचान गया, कि यह वही शख्स है, जो उठिया और उस औरतके साथ मौजूद था, जब वह (नरेन्द्र) दानके अन्दर इन लोगोंके दलमें मिलनेका उम्मीदवार हुआ था। नरेन्द्रने ख्याल किया, कि उस औरतने मेरे साथ दगाबाजी की है।

एकाएक उन बदमाशोंने फिर अपने अपने छुरेको मूठपर हाथ रखा और ज़मरा एक प्रकारकी भुनभुनाहटसे भर गया।

इस सरदारने नरेन्द्रसे गम्भीरतापूर्वक पूछा,—"क्यों जी! तुम्हें इसके इसमें कुछ कहना है"

इसपर नरेन्द्र उठ खड़ा हुआ और टेबिलके पास जाकर उसने अपने छुरेको इतने ज़ोरसे टेबिलपर मारा, कि वह कई इञ्च उसमें धंस गया। इसके बाद नरेन्द्रने कड़ककर कहा,—"यह आदमी झूठ बोलता है। यही मेरी बाजी है। जिसे मुझपर कुछ शक हो, वह आवे और चक्केसे मुझसे मुकाबिला कर ले।"

आदमी,—"खैर, मैं अपनी बात वापिस लेता हूं।"

इतना सुनते ही सबके सब डाकू खिलखिलाकर हंसने लगे।

एकबार फिर नरेन्द्र आफतसे बचा। यह चाल सिर्फ उसकी परीक्षाके लिये चली गई थी, पर वह इस परीक्षामें भी पास हो गया।

सरदार,—"यह इल्ज़ाम तो उठा लिया गया। अब और किसीको कोई उज्र हो, तो बोले; नहीं तो इसे अब दलमें भर्ती कर लूंगा।"

इसपर कोई कुछभी न बोला, सब चुपचाप बैठे रहे। यह देखकर सरदारने नरेन्द्रसे पूछा,—"क्यों, तुम दलमें मिलनेके लिये कसम खानेको तय्यार हो?"

नरेन्द्र,—"हां, तय्यार हूं।"

सरदार,—"पर याद रखना, अब इस दलमें भर्ती कर लिये जाओगे, तो उम्रभर इसी दलमें रहना पड़ेगा।"

नरेन्द्र—"हां, मैं राजी हूं। अब आपके दलमें मिल

जाऊंगा, तो जन्मभर साथ निबाहूंगा,—कभी धोखा न दूंगा।"

अब दो आदमी उठ खड़े हुए और उसके पास जाकर उन्होंने उसकी आंखपर पट्टी बांध दी और उसी कमरेमें कई बार इधर-उधर घुमाकर ले चले। यह कार्रवाई सिर्फ इसी लिये की गई थी, जिसमें नरेन्द्रको विश्वास होजाय, कि कई कमरोंके अन्दरसे उसे ले गये हैं। आखिर एक जगह जाकर वे लोग खड़े हो गये और नरेन्द्रकी आंखपरकी पट्टी खोल दी। उस कमरेमें बाहरसे थोड़ी थोड़ी रोशनी आती थी। नरेन्द्रने चारों ओर तजवीज कर देखा, तो वहां अपनेको अकेला पाया। वे दोनों आदमी, जो उसे ले आये चुपचाप सटक गये थे।

नरेन्द्र चुपचाप खड़ा ही था, कि इतनेमें वह रोशनी कुछ तेज़ पड़ी और ऐसा मालूम हुआ, कि वह किसी खास चीज़ पर लगाई गई है। अब वह उस जगहको, जहांसे रोशनी आ रही थी, देखने लगा। इतनेमें वहांका एक परदा उठ गया और एक बड़ा सा आईना देख पड़ा। रोशनी नरेन्द्रकी पीठसे आ रही थी। उसने जब आईनेकी ओर नजरकी तो उसमें अपना प्रतिबिम्ब देखा। इसके बाद तुरत ही उसने अपने प्रतिबिम्बपर किसी भयानक चीजकी छाया देखी। वह भयानक चीज एक लाश थी। नरेन्द्रकी नजर उसपर पड़ गई। वह चिल्लाकर भागा तो नहीं, पर एकबार

[illegible]प अवश्य उठा। जब वह उस लाशका देख रहा था, भी उसके सिरके पास पिस्तालकी आवाज हुई, पर वह जरा [illegible] न हिला, पत्थरको मूर्त्तिका तरह ज्योंका त्यों उसी जगह [illegible]टा खड़ा रहा।

उसी समय कहींसे आवाज आई,—"तुम गिरफ्तार बन [illegible]ये।" नरेन्द्र समझा, यह भी एक परीक्षा है।

अब मुँहपर नकाब लगाकर डाकुओंका सारा दल उस [illegible]मरेमें आ गया और सरदारने आगे बढ़कर कहा,— "शेरा! अब तुमको बाकायदे कसम खानी पड़ेगी। हमारा [illegible]ल और और दलों जैसा नहीं है। यह सबसे न्यारा है।"

शेरा,—"मैं तय्यार हूं।"

सरदार,—"हम लोगोंका दल सङ्गठित हुए आज छः महीने हो गये। पांच वर्षतक यह दल कायम रहेगा। अब तुम्हें सिर्फ साढ़े चार वर्षके लिये कसम खानी होगी। हमलोग जोकुछ लूट-पाट या चुराकर लाते हैं, आपसमें बराबर बराबर बांट लेते हैं।"

शेरा,—"यह तो बहुत अच्छी बात है।"

सरदार,—"देखो, जान चाहे चली जाय, पर दलके साथ धोखेबाजी न करनी होगी और अगर दलका कोई आदमी कभी कहीं डरे या धोखा दे, तो उसी जगह उसका काम तमाम कर देना होगा।"

शेरा,—"ऐसा ही चाहिये। यही उचित दण्ड है।"

सरदार,—"हाँ! तुम्हें एक कसौटी पनकार एक टेबिल पास बैठना होगा। उसपर एक प्याला रखा रहेगा। इस कमरेमें इसके सब आदमी आवेंगे और छुरी घोंपकर अपनी बांहका एक एक कतरा खून उस प्यालेमें डालेंगे। तुम्हें भी उसी तरह एक कतरा खून उसमें डालना पड़ेगा। यह सब हो जानेपर तुम्हें सबके सामने उस खूनको पीना पड़ेगा। पीनेके वक्त तुम्हें कसम खाना होगा, कि तुम्हें इस दलकी सब शर्तें मञ्जूर हैं और तुम इस दलके विरु[illegible] कभी कोई कार्रवाई न करोगे।"

इतना सुनते ही नरेन्द्रका कलेजा एकबार दहल उठा। उसने मन ही मन सोचा, कि कसम अब खा ली जायगी तब उसे कैसे तोड़ सकूंगा? फिर कसम अपनी खुशी[illegible] खाऊंगा, जोर जुल्मसे नहीं। चाहे मैं जासूस होऊं [illegible] और कोई, पर कसम तो कसम ही है। एकबार का[illegible] खाकर फिर उसके विरुद्ध कोई काम करना नीचता है।

ऐसा सोच-विचारकर उसने मन ही मन दृढ़ सङ्कल्प [illegible] लिया, कि चाहे जो हो जाय, कसम कभी न खाऊं[illegible] [illegible] कसम न खाऊंगा, तो ये दुष्ट मुझे कभी न छोड़ेंगे, [illegible] मार डालेंगे, और मौतके मुँहमें तो आ ही चुका हूं। [illegible] हो, जबतक जान है, तबतक उम्मीद है।

अब सरदारने फिर पूछा,—"क्यों, तय्यार हो?" [illegible]

[illegible]—"हां, तय्यार हूं।"

सरदार,—"तो तुम्हारी आंखपर फिर पट्टी बांधी जायगी।"

इतना कहते ही एक आदमीने उसकी आंखपर पट्टी बांध दी। उसे वहीं अकेला छोड़कर और सब लोग दूसरे कमरेमें चले गये। उसी वक्त एक भयानक घटना घटी। किसीने नरेन्द्रके कानमें फुसफुसाकर कहा,—"तुम कसम तो खाओगे नहीं, इससे यही बेहतर है, कि तुम चम्पत हो जाओ। तुम्हें लोग पहचान गये हैं और तुम्हारी मौत सरपर खड़ी है। अपना भला चाहते हो, तो मेरा कहना मानो।"

नरेन्द्रने समझा, कि यह भी एक परीक्षा है। वह कुछ भी न बोला, सिर्फ हँसकर रह गया।

अफसोस! इस बार हमारे चतुर नरेन्द्रने पूरा धोखा खाया, क्योंकि गुप्तरूपसे उससे सच बात कह दी गई थी, पर उसपर उसे विश्वास न हुआ।

एकबार फिर उसी शख्सने उसी तरह फुसफुसाकर नरेन्द्रके कानमें कहा,—"देखो, मैंने तुम्हें चेता दिया है। तुम कसम कभी न खाओगे; तुम्हारा ऐसा इरादा भी नहीं है, इसलिये भलाई इसीमें है, कि तुम अपनी जान लेकर यहांसे भाग जाओ। चलो, मैं तुम्हें सुरङ्गके बाहर निकाल देता हूं।"

अब भी नरेन्द्र चुपचाप खड़ा रहा। यह देखकर उस

आदमीने कहा,—"तो मैं जाता हूँ। पर याद रखना, कि मैंने तुम्हें धोखा दिया है और तुम्हें अपनी जान लेकर यहाँसे निकल भागनेका मौका भी है।"

इस घटनाके बाद दो नकाबपोश आदमी आये और नरेन्द्रकी आंखपरकी पट्टी खोलकर चुपचाप वहीं खड़े हो गये।

नरेन्द्रके सामने एक टेबिल था। उस पर बिल्लौरका बड़ी प्याला धरा हुआ था, जिसमें सबका एक एक बूंद खून जमा होगा और वही खून पीकर नरेन्द्रको कसम खानी पड़ेगी। अब उसे कुरसीपर बैठा कर दोनों नकाबपोश चले गये।

कुछ देरके बाद कन्धेपर आस्तीन चढ़ाये हुए एक आदमी आया और नरेन्द्रके सामने जाकर उसने अपनी बांहमें छुरेकी नोक घोंप उस प्यालेमें एक बूंद खून गिरा दिया! इसी तरह एक एक करके उस दलके सब आदमी आये और अपनी भुजाका एक एक कतरा खून उस प्यालेमें डालकर चले गये।

यह देखकर नरेन्द्रने सोचा, कि अब मेरी मौत धरी है। इसके बाद उसने अपना पिस्तौल टटोला, तो जेब खाली पाया! एक एक करके उसके कुल हथियार उस्तादोंके साथ उड़ा लिये गये थे। अब तो नरेन्द्रके छक्के छूट गये।

इतनेमें आखिरी आदमी आया! उसने टेबिलके पास

जाकर कहा,—"मैंने तुम्हें चेता दिया, पर तुम मेरी बात नहीं सुनते। अब भी कुछ नहीं बिगड़ा। अब भी तुम अपनी जान लेकर निकल जा सकते हो। मैं ही आखिरी आदमी हूं।"

नरेन्द्र,—"नकाब हटाओ और मुझे अपना चेहरा दिखाओ। ऐसे निकनीयत दोस्तको पहचान लेना चाहिये।"

"मैं चाहे जो होऊं, तुम अपनी कहो, कि कौन हो और किस इरादेसे तुमने शेराका नाम धारण किया है। मैं अच्छी तरह जानता हूं, कि तुम अलीपुर-जेल तोड़नेवाले 'शेरा' नहीं हो।"

अब पहले-पहल नरेन्द्रके जीमें यह खयाल उठा, कि चेतावनी ठीक थी। निकल भागने या मदद पानेकी अब कोई उम्मीद नहीं देख पड़ती। जान-बूझकर मैं शेरोंकी मांदमें घुस आया हूं और इसका फल भी अच्छी तरह भोगूंगा।

नरेन्द्र,—"जब तुम इतना जानते हो, तो यह भी जानते होगे, कि मैं कौन हूं?"

नकाबपोश,—"हां, मैं जानता हूं।"

नरेन्द्र,—"और, जालिम! मैं भी तुम्हें पहचानता हूं।"

अब उस आदमीने अपना नकाब उलट और झुककर नरेन्द्रसे कहा,—"तुम मेरे पीछे लगे हो और मुझे ही खोजते हो।"

बोली चाहता, ठीक ठीक उसी तरह नकल कर लेता था। इससे उसको बहुत मदद मिल जाती थी।

हम अभी कह आये हैं, कि सारेके सारे बदमाश उस कमरेमें घुस आये थे, पर वहां घोर अन्धकार छाया हुआ था। यह देखकर सरदारने कहा,—"लैम्प ले आओ।"

हुक्म पाते ही एक आदमी गया और लैम्प लेकर वह दरवाजेपर आया ही था, कि नरेन्द्रने निशाना साधकर ऐसी गोली मारी, कि लैम्प चूर चूर हो गया और बत्ती बुझ गई। अन्धकार ज्योंका त्यों बना रहा। उसी वक्त एक आदमी चिल्ला उठा,—"पकड़ो, पकड़ो, दगाबाज है।"

जिधरसे आवाज आई थी, लोग उधर ही टूट पड़े। इतनेमें नरेन्द्र घूमकर दरवाजेके पास चला आया। एक आदमीके सिवाय सभी अन्धकारमें थे। नरेन्द्र वहांसे चलकर खास कमरेमें पहुंचा और एक आदमीको लैम्प उठाते देखा। चुपके चुपके उसके पीछे जाकर नरेन्द्रने पिस्तौलका ऐसा कुन्दा उसके सिरपर जमाया, कि वह वापरे कहकर उसी जगह गिर पड़ा। अब क्या था, बातकी बातमें उसने सब लैम्पोंको तोड़-फोड़ कर रख दिया। बड़ी दिल्लगी थी! अन्धकारमें कोई किसीको पहचान ही न सकता था। दोस्त दुश्मन कुछ भी न मालूम होता था, नरेन्द्रने जिस आदमीको पटक दिया था, उसका पिस्तौल और नकाब ले लिया था। यह चालाकी उसके बहुत काम

उस वक्त भी उस आदमीके हाथमें नंगा छुरा था। इस व्यालसे इरादेसे नरेन्द्रको आंख चमकने लगी। उसने बड़ी फुर्तीके साथ हाथ बढ़ाकर उस आदमीको दस्तां पकड़ और छुरा छीन लिया। यह काम पलक मारते हो गया।

इस कार्रवाईसे जालिम न चीखा न चिल्लाया। व झटककर पीछे हट गया और पिस्तौल निकालकर उ नरेन्द्रपर फैर कर दिया। बड़ी चालाकीसे नरेन्द्रने वार खाली दिया और कूदकर उससे भिड़ गया। दोनोंकी कुश्ती होने लगी। टेबिल उलट गया, लेम्प चूर चूर हो गया, बत्ती बुझ गई। आखिर नरेन्द्रने इतने जोरसे जालिम उठाकर पटका, कि वह बेहोश हो गया।

इतनेमें 'धरो, पकड़ो' कहते हुए सब आदमी उस कामरेमें घुस आये। बेचारा नरेन्द्र बड़ी आफतमें पड़ गया, पर तौ भी वह अपनी घातमें था।

चौथा परिच्छेद।

भेद खुलना।

नरेन्द्र उन दुष्टोंके हाथसे निकल जानेकी तदबीरमें ल था। एक बात उसमें बहुत अच्छी थी, कि वह जि

बोली चाहता, ठीक ठीक उसी तरह नकल कर लेता था। इससे उसको बहुत मदद मिल जाती थी।

हम अभी कह आये हैं, कि सारेके सारे बदमाश उस कमरेमें घुस आये थे, पर वहां घोर अन्धकार छाया हुआ था। यह देखकर सरदारने कहा,—"लैम्प ले आओ।"

हुक्म पाते ही एक आदमी गया और लैम्प लेकर वह दरवाजेपर आया ही था, कि नरेन्द्रने निशाना साधकर ऐसी गोली मारी, कि लैम्प चूर चूर हो गया और बत्ती बुझ गई। अन्धकार ज्योंका त्यों बना रहा। उसी वक्त एक आदमी चिल्ला उठा,—"पकड़ो, पकड़ो, दगाबाज है।"

जिधरसे आवाज आई थी, लोग उधर ही टूट पड़े। इतनेमें नरेन्द्र घूमकर दरवाजेके पास चला आया। एक आदमीके सिवाय सभी अन्धकारमें थे। नरेन्द्र वहांसे चलकर खास कमरेमें पहुंचा और एक आदमीको लैम्प उठाते देखा। चुपके चुपके उसके पीछे जाकर नरेन्द्रने पिस्तौलका ऐसा कुन्दा उसके सिरपर जमाया, कि वह बापरे कहकर उसी जगह गिर पड़ा। अब क्या था, बातकी बातमें उसने सब लैम्पोंको तोड़-फोड़ कर रख दिया। बड़ी दिल्लगी थी! अन्धकारमें कोई किसीको पहचान ही न सकता था। दोस्त दुश्मन कुछ भी न मालूम होता था, नरेन्द्रने जिस आदमीको पटक दिया था, उसका पिस्तौल और नकाब ले लिया था। यह चालाकी उसके बहुत काम

आई, क्योंकि एक आदमीने धीरे धीरे कहा,—"बात छोड़ो और सब कोई बिना नकाबके आदमीको खोजो।" अब नरेन्द्रके पास भी नकाब था, इसलिये वह बेखटके रहा। वह खुद उन लोगोंके साथ बिना नकाबके आदमीको खोजने लगा। इसके साथ साथ वह भागनेकी राहकी ओर भी बढ़ता जाता था। उस वक्त सब चुप थे। कमरेमें भयानक सन्नाटा छाया हुआ था, मानो वहां एक आदमी भी न था। इतनेमें नरेन्द्रको किसीकी फुसफुसाहट सुन पड़ी। बात सुननेके इरादेसे वह उसी जगह जा पहुंचा। फुसफुसानेवाला खुद सरदार ही था। वह एक आदमीसे कह रहा था,—"हम लोग एकदम उल्लू बना दिये गये। वह उम्मीदवार वेश बदले हुए था। शायद वह वही शख्स है, जिसे मैंने सड़कपर गोली मारी थी। उसे यहांसे कभी जिन्दा न निकल जाने दूंगा।"

आदमी,—"अगर मिल गया, तो कभी न जा सकेगा, पर रोशनीकी बड़ी जरूरत है।"

सरदार,—"किसीको ऊपर भेजकर मंगा लो!"

आदमी,—"हां, ठीक है; मैं तो इस बातको भूल ही गया था। अच्छा, मैं खुद जाता हूं।"

नरेन्द्रने देखा, कि यही मौका है। इसके पीछे निकल जाना ही उचित है। यही सोचकर उसने झट उस आदमीको पकड़कर कहा,—"मिल गया, मिल गया। इसपर उसने

हा,—"अरे बेवकूफ मैं हूं। छोड़ दे।" बस, नरेन्द्रका मतलब हासिल हो गया। उसने उस आदमीको पकड़कर अच्छी तरह न्दाज लिया और आगे लाभ उठानेके लिये उसकी बोली भी हचान ली। आखिर वह आदमी नरेन्द्रसे अपनेको छुड़ाकर रङ्गकी ओर चला। नरेन्द्र उसके पीछे लगा। तहखानेसे निकलकर वह उस आदमीके पीछे सुरङ्गके पास पहुंचा, जिसमें रेंगकर जाना पड़ता था। इस सुरङ्गसे निकल जानेपर फ़र नरेन्द्र बेखटके हो जायगा। लेकिन जब वह उस सुरङ्गमें सनेके लिये झुका, तो एकबार उसका खून सूख गया।

जिस आदमीके पीछे पीछे नरेन्द्र गया था, वह उससे बहुत आगे बढ़ गया था। सुरङ्गके अन्दर वह ठीक उसके पीछे पीछे न जा सका। इसी बीचमें उसे अपने पीछे बड़ी खलभली मालूम हुई। अकस्मात् सुरङ्गकी दीवारपर रोशनी दिखाई पड़ी। अब नरेन्द्र बड़े पशोपेशमें पड़ गया। लौटता है तो जान जाती है! जहां है अगर वहीं रह जाय, तो प्राण नहीं बचते और सुरङ्गके फन्देमें भी जानसे हाथ धो बैठनेका डर है। आखिर सोच-विचारकर उसने आगे बढ़नेमें ही भलाई देखी।

जो आदमी आगे गया है, वह सुरङ्गसे बाहर हो गया होगा। यह सोचकर वह फन्देमें घुसा और अभी उसके पारभी न गया था, कि पीछे किसीकी आवाज सुनाई दी और साथ ...ी कुछ रोशनी देख पड़ी।

"तुम्हारे कौन है? बहादुर! तुम ही हो!"

नरेन्द्रने उस आदमीकी आवाजको ठीक समझकर कहा,—"हां, मैं ही हूं।"

"तुमसे पहले भी कोई आदमी गया है?"

"नहीं।"

नरेन्द्र जवाब भी देता जाता था और आगे भी बढ़ता जाता था, कि किसी तरह इस फन्देको पार कर जाय। नहीं तो कहीं पकड़ लिया गया, तो कुत्तेकी मौत मरेगा।

अफसोस! इतनेमें फन्देकी कल चला दी गई। नरेन्द्रने देखा, कि राह धीरे-धीरे तङ्ग होती जाती है। मानो वह जीता-जागता कब्रमें दफन हुआ चाहता है।

इतनेमें पीछेवाले आदमीने हाथ बढ़ाकर नरेन्द्रका पैर पकड़ लिया और कहा,—"तुम आगे क्यों नहीं जाते?"

नरेन्द्र,—"माजरा क्या है?"

"हम लोग आ गये,—" इतना कहकर उसने नरेन्द्रका पैर अपनी तरफ खींचा।

बेचारा नरेन्द्र सूख गया, सब उम्मीद भाग गई, पर उसने एकबार कोशिश करके देख लेनेका पक्का इरादा कर लिया।

अब जिस आदमीने नरेन्द्रका पैर पकड़कर खींचा था, उसने कहा,—"फन्देकी कल खोल दी गई है। मैं पीछे नहीं लौट सकता।"

इसी वक्त नरेन्द्रको मालूम हुआ, कि तङ्ग राह अब चौड़ी

हो रही है। यह देखकर वह बहुत खुश हुआ, मानो मौतके मुंहसे निकल आया हो।

एक मिनट भी बरबाद करनेका वक्त न था। नरेन्द्र समझ गया था, कि उसके पीछेवाले आदमी उसे पहचान गये हैं अथवा उसपर सन्देह करते हैं। यह सोचकर उसने अपना पिस्तौल निकाला और उसका घोड़ा चढ़ा दिया। इतनेमें उस आदमीने जोरसे नरेन्द्रको खींचा। अब नरेन्द्रने अपने हाथको पैरकी तरफ ले जाकर पिस्तौलका मुँह उस आदमी-की ओर कर दिया और कहा,—"पैर छोड़ दो।" इतना सुनते ही उसने और भी जोरसे खींचा! अब नरेन्द्रको कुछ भी सन्देह न रह गया। उसे पूरा विश्वास हो गया, कि मैं पहचान लिया गया हूं और बाहर खिंच जानेपर मार डाला जाऊंगा। यह खयालकर उसने चट घोड़ेको दबा दिया और साथ ही उस आदमीके हाथसे नरेन्द्रका पैर छूट गया।

पिस्तौलकी आवाज सुनते ही सबके सब घबरा उठे। फन्देकी कल घुमानेका खयाल किसीको न हुआ। इतनेमें तो नरेन्द्र उस सुरङ्गके बाहर हो गया, मगर ज्यों ही पेचदार सीढ़ीके पास पहुंचा, कि दूसरी आफत आई! उसकी खोपड़ी-पर पिस्तौलका मुँह रखकर किसीने धीरेसे उसके कानमें कहा,—"अपने हाथ ऊपर उठाओ।" आवाज पहचानकर वह बहुत खुश हुआ और धीरेसे बोला,—"सुरेन्द्र!" इतना कहते ही उसके कपालपरसे पिस्तौल हटा लिया गया।

सुरेन्द्र,—"कुशल तो है ?"

नरेन्द्र,—"हां, कुशल है, पर जो आदमी मुझसे पहले आया है, वह कहां है ?"

सुरेन्द्र,—"उसकी चिन्ता मत करो ।"

नरेन्द्र,—"अच्छा, अब तो सारा दल हम लोगोंके हाथमें है ! मैं तो बड़ी आफतमें पड़ गया था ; कालके मुंहसे निकल आया हूं ।"

सुरेन्द्र,—"माधोको पहचान लिया है ?"

नरेन्द्र—"मैं तो समझता हूं, कि सारा दल हाथमें आ गया है । तुम्हारे साथ कितने आदमी हैं ?"

सुरेन्द्र,—"बहुत तो नहीं, पर काम भर हैं ।"

नरेन्द्र,—"अच्छा, चलो ; पहले ऊपर चलें । एक आदमीको यहां पहरेपर रख दो ।"

तुरत ही एक आदमी उस जगह तैनातकर नरेन्द्र और सुरेन्द्र दोनों ऊपर चले गये ।

नरेन्द्र,—"वह औरत कहां है ?"

सुरेन्द्र,—"कौन औरत ?"

नरेन्द्र,—"वही जो इस दलमें थी ।"

सुरेन्द्र,—"यहां आकर मैंने तो किसी औरतको नहीं देखा ।"

नरेन्द्र,—"किसीको नहीं !"

सुरेन्द्र,—"नहीं, किसीको भी नहीं ।"

अँगूठेके बल आगे बढ़ा। और आदमी उसके पीछे-पीछे चले। आखिर वे लोग उस कमरेमें जा पहुंचे जिसमें बदमाश लोग पहले बैठे हुये थे, किन्तु वहां एक आदमी भी न देख पड़ा!

लालटेनकी रोशनीमें चारों ओर देखनेपर सुरेन्द्रने एक जगह थोड़ा सा चूनेका चूर पडा देखा और अपने साथी नरेन्द्रको बुलाकर उसे दिखाया।

यह चूनेका चूर ही प्रधान सूत्र था। उसे देखते ही दोनों साथियोंको विश्वास हुआ, कि अब सारा भेद खुल जायगा।

इसके बाद सब आदमी चारों ओर घूम घूमकर दीवारोंको अच्छी तरह जांचने लगे। कुछ देरमें एक तरफकी दीवारपर पत्थरकी एक पटिया दिखाई पड़ी। उसे हटानेपर दूसरी सुरङ्गका मुँह देख पड़ा और उसमे ठण्ढी और दुर्गन्धित हवाका झकोरा आया। एक एक करके सब आदमी उसमें उतर गये। भीतर खूब ऊँची और चौड़ी राह थी। उसमें आदमी आसानीसे चल-फिर सकता था।

अभी वे लोग थोड़ी ही दूर गये थे, कि कुछ आवाज़ सुनाई दी। साथ ही चूहोंका एक झुण्ड उनके पाससे दौड़कर निकल गया।

यह देखकर नरेन्द्रने सुरेन्द्रसे कहा,—"ऐसा मालूम होता है, कि आगे कोई माला है।"

मियोंको सावधानकर रखा था। पिस्तौलकी आवाज होते ही वह चट जमीनपर लेट गया। सब गोलियां ऊपरसे निकल गईं।

आखिर नरेन्द्रने सीटी बजाई। सीटीकी आवाजके साथ साथ नरेन्द्रके आदमियोंने भी गोली बरसाना शुरू कर दिया।

इसके बाद नालेमें कुछ देरतक सन्नाटा छाया रहा।

अब नरेन्द्रने फिर उन लोगोंको ललकारा, पर कुछ जवाब न मिला। वह समझ गया, कि उन लोगोंका क्या इरादा है। उसने चट अपने आदमियोंको इशारा किया। बातकी बातमें वे लोग उसके पास पहुँच गये। सबके हाथमें एक एक मजबूत डण्डा था। नरेन्द्रने धीरे-धीरे उन लोगोंको कुछ कहा। इसके बाद ही वे लोग एकदम बदमाशोंपर टूट पड़े।

पुलिसको आते देख कुछ लोग तो पानीमें कूद पड़े, कुछ लड़नेको तय्यार हो गये और कुछ गाली-गुफ़ा बकने लगे। पुलिसवालोंने अपनी-अपनी बांहपर फासफरस लगा हुआ कपड़ा बांध रखा था, इसलिये वे लोग अन्धकारमें सहज ही पहचाने जाते थे। चार पांच मिनटकी लड़ाईके बाद नरेन्द्रकी जीत हुई। ग्यारह डाकू गिरफ़ार किये गये, बाकी निकल भागे।

लड़ाईमें कई पुलिसवाले भी घायल हुये थे। किसीको छुरी लगी थी और किसीको पिस्तौलकी गोली, पर जख्म संगीन न था।

नि पास नरेन्द्रको देख और उससे यह सुनकर, कि वह
ो खोजती थी, उसे बड़ा ताज्जब हुआ। यह सब उसे
दूका खेल सा मालूम हुआ।

औरत,—"मुझे कैसे विश्वास हो, कि आप नरेन्द्र हैं?"

जासूस,—"अगर मैं नरेन्द्र न होता, तो मैं ही कैसे
नता, कि तुम मनोरमा हो?"

औरत,—"पर वहां तो कोई दूसरा हो आदमी था,
सने मुझे पहचान लिया था।"

जासूस,—"पुलिस तुम्हें खोज रही है।"

औरत,—"मुझे मालूम है।"

जासूस,—"आज जिस आदमीसे तुमसे मुलाकात हुई
, उसने अन्दाजसे तुम्हारा नाम लिया होगा, पर भागकर
मने बुरा किया।"

औरत,—(ताज्जुबके साथ) "आप कैसे जानते हैं, कि मैं
ाग चली थी?"

जासूस,—"मैं तो तुम्हारे पीछे ही पीछे आ रहा था।"

औरत,—"तब क्या आप ही आफिसमें मिले थे?"

जासूस,—"अगर मैं होता, तो तुम पहचानतीं न?"

औरत,—"आप नरेन्द्र नहीं हैं।"

जासूस,—"मैं ही नरेन्द्र हूं और मैं इस बातका सुबूत
ो दे सकता हूं।"

औरत,—"कैसे?"

जासूस,—"मुझे दौलतकी चाह नहीं है, मैं तो कामयाबी चाहता हूं।"

मनोरमा,—"मैं आपको एक अनूठा किस्सा सुनाया चाहती हूं।"

जासूस,—"सुनाओ।"

मनोरमा,—"अगर आप मेरा साथ और मुझे मदद दें, मैं उन दुष्टोंको अंगूठा दिखा सकती हूं, जो मुझे फांसीपर टकवा और जैसा, कि आजतक दुनियामें नहीं हुआ, वैसी ारतकी शैतानी-तदबीरका मुझे शिकार बनाना चाहते हैं।"

जासूस,—"तुम्हारी बातोंने मेरे कौतूहल और महानु- तिको जगा दिया है। अब जल्द अपना किस्सा कह डालो।"

औरत क्षणभर चुप रही। इसके बाद उसने एक ऐसी ारतकी कहानी सुनाई, जैसी कि कभी किसीने न नी होगी।

मनोरमा,—"एक वर्ष हुआ, बम्बई शहरमें एक मनुष्यकी त्यु हुई। वह बंगाली-सन्तान था। कंजूसीके सबब उसने हुतसा धन इकट्ठाकर लिया था।"

जासूस,—"अहा! बेचारेकी हत्या की गई!"

मनोरमा,—"अब मुझे विश्वास होगया है, कि उसका न ही किया गया था, पर अब तक मैं ही एक जीव हूं मे इस बातपर सन्देह है।"

अब तक जासूसने जो कुछ सुना, उसपर विश्वास किया। अविश्वास करनेका कोई कारण उसे न देख पड़ा।

मनोरमा,—"वृद्ध चिन्तामणिने अपना वसीयतनामा लिखा। उसमें लिखा गया कि अगर सुशीलाके कोई सन्तान न हो, तो उसकी मृत्युके बाद कामिनीकुमार उनकी सारी मिलकियतका मालिक हो। कामिनीकुमार बंगाली न था।"

जासूस,—"बंगाली न था!"

मनोरमा,—"नहीं; वह चिन्तामणिका चचेरा पोता था। चिन्तामणिका भतीजा क्रस्तान हो गया था और उसने एक असली क्रस्तानिनसे शादी कर ली थी।"

जासूस,—"ओह! अब मैं समझ गया।"

मनोरमा,—"वसीयतनामेकी बात जाहिर होते ही बखेड़ा शुरू हुआ। कामिनीकुमार निडर और बदमाश आदमी था। बचपनमें ही उसके बाप-मा मर गये थे, इससे वह बड़ा उद्दण्ड हो उठा था।"

जासूस,—"यह सब जाननेपर भी चिन्तामणिने कैसे उसे अपना वारिस बनाया?"

मनोरमा,—"बुड्ढेको यह सब कुछ भी मालूम न था। यह बात मुझे उसकी मौतके बाद मालूम हुई है। कामिनीकुमार बड़ा भारी दुष्ट और दगाबाज है, कोई भारी कारवाई करनेके इरादेसे वह कुछ दिनोंके लिये साधु बन गया था।"

अब तक जासूसने जो कुछ सुना. उसपर विश्वास किया। अविश्वास करनेका कोई कारण उसे न देख पडा।

मनोरमा,—"वृद्ध चिन्तामणिने अपना वसीयतनामा लिखा। उसमें लिखा गया कि अगर सुशीलाके कोई सन्तान न हो, तो उसकी मृत्युके बाद कामिनीकुमार उनकी भारी मिलकियतका मालिक हो। कामिनीकुमार बंगाली न था।"

जासूस,—"बंगाली न था।"

मनोरमा,—"नहीं, वह चिन्तामणिका चचेरा पोता था। चिन्तामणिका भतीजा क्रस्तान हो गया था और उसने एक असली क्रस्तानिनसे शादी कर ली थी।"

जासूस, —"ओह! अब मैं समझ गया।"

मनोरमा, "वसीयतनामेकी बात जाहिर होते ही बखेडा शुरू हुआ। कामिनीकुमार निडर और बदमाश आदमी था। बचपनमें ही उसके बाप मा मर गये थे, इससे वह बड़ा उद्दण्ड हो उठा था।"

जासूस,—"यह सब जाननेपर भी चिन्तामणिने कैसे उसे अपना वारिस बनाया?"

मनोरमा,—"बुड्ढेको यह सब कुछ भी मालूम न था। यह बात मुझे उसकी मौतके बाद मालूम हुई है। कामिनी कुमार बड़ा भारी दुष्ट और दगाबाज है, कोई भारी कार्रवाई करनेके इरादेसे वह कुछ दिनोंके लिये साधु बन गया था।"

अब तक जासूसने जो कुछ सुना, उसपर विश्वास किया। अविश्वास करनेका कोई कारण उसे न देख पड़ा।

मनोरमा,—"हद चिन्तामणिने अपना वसीयतनामा लिखा। उसमें लिखा गया कि अगर सुशीलाके कोई सन्तान न हो, तो उसकी मृत्युके बाद कामिनीकुमार उनकी सारी मिलकियतका मालिक हो। कामिनीकुमार बंगाली न था।"

जासूस,—"बंगाली न था!"

मनोरमा,—"नहीं; वह चिन्तामणिका चचेरा पोता था। चिन्तामणिका भतीजा जर्म्तान हो गया था और उसने एक जर्मनी क्रिस्तानिनसे शादी कर ली थी।"

जासूस,—"ओह! अब मैं समझ गया।"

मनोरमा,—"वसीयतनामेकी बात जाहिर होते ही बखेड़ा शुरू हुआ। कामिनीकुमार निडर और बदमाश आदमी था। बचपनमें ही उसके बाप-मा मर गये थे, इससे वह बड़ा उद्दण्ड हो उठा था।"

जासूस,—"यह सब जाननेपर भी चिन्तामणिने कैसे उसे अपना वारिस बनाया?"

मनोरमा,—"बुड्ढेको यह सब कुछ भी मालूम न था। यह बात मुझे उसकी मौतके बाद मालूम हुई है। कामिनीकुमार बड़ा भारी दुष्ट और दगाबाज है, कोई भारी कारवाई करनेके इरादेसे वह कुछ दिनोंके लिये साधु बन गया था।"

जासूस,—"क्या उसी खूनके लिये तुम्हारी खोज हो रही है?"

मनोरमा,—"नहीं, सुनिये,—मुझे मिस्टर धीरकी सुशीला नाम्नी एक लड़की थी। लड़कीको क्रस्तानी शिक्षा दी गई थी, पर बापको इसका कुछभी हाल मालूम न था। सारे बम्बई शहरमें उस लड़कीको खूबसूरतीकी धूम पड़ गई थी। और वास्तवमें जैसी वह रूपवती थी वैसी ही गुणवती भी थी।"

जासूस,—"क्या वह मर गई?"

मनोरमा,—सुनिये! लड़कीने बापको भी क्रस्तान बना डाला, और तभीसे वह एक दूसरा ही आदमी हो गया उसका मन भी पलट गया। बम्बईके देवालय और खैराती स्कूलोंको पहले वह खूब सहायता करता था, पर क्रस्तान होते ही उसने वह सहायता क्रस्तानी गिरजा और क्रस्तानी स्कूलोंको देनी शुरू कर दी।"

जासूस,—"जिसकी बात कह रही हो, क्या तुम उस कुटुम्बकी हो?"

मनोरमा,—"नहीं; मैं सुशीलाके साथ स्कूलमें पढ़ती थी उससे मेरी दिली दोस्ती हो गई थी। मेरी ही बातें सुन सुनकर उसने क्रस्तानी मजहब अख्तियार किया था। सुशीला मुझे बहुत चाहती थी। जब मेरा आखिरी रिश्तेदार मर गया, तब इस संसारमें मेरा और कोई न रहा। उसी वक्त मुझे सुशीलाके यहां आश्रय मिला।"

अब तक जासूसने जो कुछ सुना, उसपर विश्वास किया। अविश्वास करनेका कोई कारण उसे न देख पड़ा।

मनोरमा,—"वृद्ध चिन्तामणिने अपना वसीयतनामा लिखा। उसमें लिखा गया कि अगर सुशीलाके कोई सन्तान न हो, तो उसकी मृत्युके बाद कामिनीकुमार उनकी सारी मिलकियतका मालिक हो। कामिनीकुमार बंगाली न था।"

जासूस,—"बंगाली न था!"

मनोरमा,—"नहीं; वह चिन्तामणिका चचेरा पोता था। चिन्तामणिका भतीजा क्रस्तान हो गया था और उसने एक असली क्रस्तानिनसे शादी कर ली थी।"

जासूस,—"ओह! अब मैं समझ गया।"

मनोरमा,—"वसीयतनामेकी बात जाहिर होते ही बखेड़ा शुरू हुआ। कामिनीकुमार निडर और बदमाश आदमी था। बचपनमें ही उसके बाप-मा मर गये थे, इससे वह बड़ा उद्दण्ड हो उठा था।"

जासूस,—"यह सब जाननेपर भी चिन्तामणिने कैसे उसे अपना वारिस बनाया?"

मनोरमा,—"बुड्ढेको यह सब कुछ भी मालूम न था। यह बात मुझे उसकी मौतके बाद मालूम हुई है। कामिनीकुमार बड़ा भारी दुष्ट और दगाबाज है, कोई भारी कार्रवाई करनेके इरादेसे वह कुछ दिनोंके लिये साधु बन गया था।"

जासूस,—"क्या उसी गुनके लिये तुम्हारी खोज हो रही

मनोरमा,—"नहीं, सुनिये,—युद्ध चिन्तामणि घो
सुशीला नाम्नी एक लड़की थी। लड़कीको क्रस्तानी
दी गई थी, पर बापको इसका कुछभी हाल मालूम न
सारे बम्बई शहरमें उस लड़कीकी खूबसूरतीकी धूम पड़
थी। और वास्तवमें जैसी वह रूपवती थी वैसी ही गुण
भी थी।"

जासूस,—"क्या वह मर गई?"

मनोरमा,—सुनिये! लड़कीने बापको भी क्रस्तान ब
डाला, और तभीसे वह एक दूसरा ही आदमी हो गय
उसका मन भी पलट गया। बम्बईके देवालय औ
खैराती स्कूलोंको पहले वह खूब सहायता करता था, प
क्रस्तान होते ही उसने वह सहायता क्रस्तानी गिरजा औ
क्रस्तानी स्कूलोंको देनी शुरू कर दी।"

जासूस,—"जिसकी बात कह रही हो, क्या तुम उस
कुटुम्बकी हो?"

मनोरमा,—"नहीं; मैं सुशीलाके साथ स्कूलमें पढ़ती थी।
उससे मेरी दिली दोस्ती हो गई थी। मेरी ही बातें सुन
सुनकर उसने क्रस्तानी मजहब अख़्तियार किया था। सुशीला
मुझे बहुत चाहती थी। जब मेरा आख़िरी रिश्तेदार मर
गया, तब इस संसारमें मेरा और कोई न रहा। उसी

आधुम, "घफ़सोसकी बात है, कि मुझको उसका ठी… चालचलन न मालूम हुआ!"

मनोरमा, —"बड़े अफ़सोसकी बात है! कामिनीकुमार सुशीलापर आसक्त हुआ। पर वह मनसे ही उसे घृणा करती थी। वह चाहता था, कि सुशीलासे शादी करके उसके बापके जीतेजी ही उसकी सारी मिलकियतका मालिक बन बैठे। आखिर जब वह शादीसे निराश हो गया, तो दूसरे ढङ्गसे कुछ लेना चाहा। इसी बीचमें चिन्तामणि चल बसे।"

जासूस,—"आह! पोतेने मार डाला?"

मनोरमा,—"मुझे मालूम नहीं। आकस्मिक मृत्यु हु… पर लोगोंको यही विश्वास हुआ, कि स्वाभाविक मृत्यु हुई है…"

जासूस,—"बुड्ढेकी मौतपर किसीको कुछ सन्दे… नहीं हुआ?"

मनोरमा,—"नहीं; और उसी वक्त सुशीलाके खूनकी… शोहरत कर दी गई! लोगोंने अनुमान कर लिया, कि उसका… खून किया गया है।"

जासूस,—"अनुमान कर लिया, क्यों कहती हो?"

मनोरमा,—"एक लाश मिली। वह सुशीलाकी ही शनाख़्त… की गई। उसकी देहपरके जख़्मोंसे यही साबित हुआ, कि… निःसन्देह उसकी हत्या की गई है।"

जासूस,—"लाश क्या सचमुच ही पहचानी गई थी?"

मनोरमा,—"नहीं; जख़्मोंसे चेहरा ऐसा बिगड़ गया

था, कि पहचानना असम्भव था। वास्तवमें वह सुशीलाकी लाश न थी! उसको जगह किसी दूसरे की लाश लाकर रखी गई थी।"

जासूस,—"पर क्या यह जाल पकड़ा नहीं गया?"

मनोरमा,—"लाश सुशीलाकी देहसे बहुत मिलती-जुलती थी और चेहरा पहचाना ही न जाता था।"

जासूस,—"खूनका इल्ज़ाम किसपर लगाया गया।"

मनोरमा,—"मुझपर।"

जासूस,—"क्यों?"

मनोरमा,—"इसलिये, कि कामिनीकुमारको मालूम हो गया था, कि मैं उसका बुरा मतलब समझ गई थी। मेरा मुँह बन्द करनेके लिये उसने मेरे साथ विवाह करना चाहा, पर मैंने उसे सारा भेद खोल देनेकी धमकी दी।"

जासूस,—"और उसकी चालाकी तुमने पहले ही पकड़ ली थी?"

मनोरमा,—"हां, सुनिये,—उसने बड़ी चालाकी खेली थी। उसने बन्दोबस्त कर लिया था, कि एक चाल न चलेगी, तो दूसरी चलूंगा। मैं सुशीलाके साथ उसी जगह टहल रही थी, जहां उसकी नकली लाश पाईगई थी। कामिनीकुमारने मुझे फंसानेके लिये पहलेसे ही सुबूत इकट्ठा कर रखे थे। पहला सुबूत तो यही है, कि उसकी मौतके पहले मैं ही उसके साथ थी।"

जासूस,—"तब तुमने क्या किया ?"

मनोरमा,—"मैं और क्या करती ? शादी करनेपर राजी हो गई।"

जासूस,—"तुमने अपनी बातपर कायम रहनेका इरादा कर लिया था ?"

मनोरमा,—"नहीं ; मैं सिर्फ चम्पत हो जानेके लिये मौका ढूंढ़ रही थी।"

जासूस,—"और अब तुमपर सुशीलाके खूनके लिये गिरफ़ारीका वारण्ट जारी है ?"

मनोरमा,—"हां ; और अगर पकड़ी गई, तो वेगुनाह फांसी पा जाऊंगी।"

जासूस,—"अपनी निर्दोषिता कैसे प्रमाणित किया चाहती हो ?"

मनोरमा,—"सुशीलाको जीती-जागती, निकालकर।"

जासूस,—"तुम्हें विश्वास है, कि वह जीवित है ?"

मनोरमा,—"हां।"

यहांपर मनोरमाने नरेन्द्रसे बड़ी अद्भुत-अद्भुत बातें कहीं, जिसका हाल आगे चलकर मालूम होगा।

जासूस,—"तो तुम्हें विश्वास है, कि सुशीलाकी हत्या नहीं की गई और वह इसी देशमें है ?"

मनोरमा,—"मुझे पूरा विश्वास है।"

जासूस,—"तुमने यह भी कहा है, कि कामिनीकुमार यहीं है?"

मनोरमा,—"हां, यहीं है, और अपने साथ दो बम्बैया जासूस भी ले आया है। दोनों चलते पुर्जे हैं।"

इसके बाद नरेन्द्र कुछ देरतक चुप रहकर फिर बोला,—"अच्छी बात है। मेरे मनलायक काम है। दो कलकतिया जासूसोंका दो बम्बैया जासूसोंसे सामना है, देखें किसकी जीत होती है।"

मनोरमाके किस्सेपर उसे ज़रा भी सन्देह न हुआ। उसने सब बातोंका प्रमाण दिया था, इससे उसको इस बातपर भी विश्वास हुआ, कि अभी सुशीला जीती जागती वंगदेशमें मौजूद है।

मनोरमा,- "सुनामा भी मनमें एक पर्व याद उसे मान लिया सकता है। और स्थान इतना है, कि वह कहांतक पहुंचेगा?"

जासूस, -"बस, एक स्थान घोर है। तुम उन चोर बदमाशोंके पल्ले कैसे पड़ गई?"

मनोरमा,—"इस देशमें आनेके पन्न राहमें एक आदमीसे मुलाकात हो गई। उसे मैं लड़कपनसे जानती थी। उसीके ज़रिये उन लोगोंके दलमें आ मिली।"

जासूस,—"तुम अच्छी शिक्षिता स्त्री हो और सुखसे पली हो। मेरी समझमें यह नहीं आता, कि ऐसे जाने-पहचाने आदमीने तुम्हें ऐसे स्थानमें शरण लेनेकी सलाह कैसे दी?"

मनोरमा,—"उस दुर्घटनाकी धूम सब देशोंमें पड़ गई थी। मेरी गिरफ़ारीके लिये भारी भारी इनामका इश्तिहार जारी किया गया था। उसने मुझे पहचान लिया। मैं नहीं जानती थी, कि वह चोर-बदमाश हो गया है। जब मैं उसके साथ उन दुष्टोंके अड्डे पर गई, तब मुझे सारा हाल मालूम हुआ।"

जासूस,—"जब तुम्हें उसका बुरा चाल-चलन मालूम हो गया, तो तुम उसी वक्त भाग क्यों न खड़ी हुई?"

मनोरमा,—"जबतक आपने सहायता देनेका वचन न दिया था, तबतक मुझे और कोई मौका न मिला था। जो आदमी मुझे वहां ले गया था उसने यही भरोसा दिलाया, कि और जगहोंकी बनिस्बत मैं वहां बेखटके रहूंगी, और छः

महीने तक मैं कुशलसे रही भी। मुझे अपने दुश्मनोंक बराबर हाल मिला करता था।"

जासूस,—"तब तुम्हें यह मालूम है, कि कामिनीकुमार यहीं है?"

मनोरमा,—"हां; जबसे मैं यहां आई हूं, प्रायः तभीसे वह भी यहीं देख पड़ता है। उसने दो जासूस मुकर्रर कर रखे हैं, पर तो भी मैं उससे अबतक बची हूं।"

इस पिछली बातको नरेन्द्रने बिल्कुल सच समझा। उसके साथी सुरेन्द्रने एकबार उन लोगोंका पीछा किया था जो मनोरमाकी खोज कर रहे थे। और उसीसे नरेन्द्रको मनोरमाका कुछ हाल मिला था और अपनी बुद्धिमानीसे ही उसने चोरीं पकड़ेमें उसे देखकर उसपर सन्देह किया था।

जासूस,—"तो तुम्हें मालूम है, कि कामिनीकुमार कल कत्तेमें ही है? तुमने उसे आखिरी बार कब देखा था?"

मनोरमा,—"प्रायः एक सप्ताह हुआ!"

जासूस,—"किस तरह देखा था?"

मनोरमा,—"मैंने उसका पीछा करना चाहा था।"

जासूस,—"कहातक पीछा करनेका इरादा था?"

मनोरमा,—"उस जगह तक, जहां सुशीला छिपाः रखी गई है।"

जासूस,—"तो तुम समझती हो, कि उसे सुशीलाका प मालूम है और वह कलकत्तेमें ही है?"

नोरमा,—"बेशक।"

ासूस,—"उसने तुम्हें नहीं देखा ?"

मनोरमा,—"नहीं; जब से मैं डाकुओंके साथ रहने
हूं, तबसे मैं दूसरी ही औरत बन गई हूं। हमेशा
रिमकी तरह पीछा की जानेसे मेरी अक्ल, होशियारी और
म्मत बढ़ गई है। मैं वेश बदलकर उसका पीछा करती थी।"

जासूस,—"तुम्हें कुछ मालूम है कि इस वक्त सुशीला
हां है ?"

मनोरमा—"हां, मालूम है।"

जासूस,—"उसके दोनों बम्बैया जासूसोंको पहचान
सकती हो ?"

मनोरमा,—"हां, पहचान सकती हूं।"

जासूस,—"सुशीलाका फोटो तुम्हारे पास है ?"

मनोरमा,—"है।"

इसके बाद मनोरमाने अपनी जाकेटके पाकेटसे एक तस्वीर
निकालकर नरेन्द्रके हाथमें रख दी। उस गज़बकी खूबसूरत
तस्वीरको देखकर एकबार नरेन्द्र चौंक उठा।

जिसका फोटो था, वह गेहुंये रङ्गकी थी, उसकी आंख
और बाल काले थे। उसके चेहरेकी बनावटमें यद्यपि क
तक न गया था। वह बहुत ही खूबसूरत थी।"

कुछ देरतक नरेन्द्र मन ही मन सुशीलाकी खूबसूरतीकी

तारीफ करता रहा; आखिर उसने कहा,—"अहा! कैसा सुन्दर मुख है! ऐसी खूबसूरती मैंने आगे कभी नहीं देखी।"

मनोरमा,—"एक नामी चित्रकारने सुशीलाको बंगदेशमें सबसे सुन्दर बताया है।"

जासूस,—"उसकी बात बहुत ठीक है। विश्वास रखो, मनोरमा! कि जब तक मैं उस जगहका पता नहीं लगा लेता, जहां वह है, तबतक मुझे चैन नहीं।"

मनोरमा, "काम फतह कीजिये और मुंहमांगा इनाम लीजिये।"

अब नरेन्द्रने फिर एकबार फोटोकी ओर देखकर कहा,—"सम्भव है, कि मुझे भारी इनाम मिले और मुझे विश्वास होता है, कि मैं इसके योग्य भी होऊंगा। (कुछ ठहरकर) अब तुरत ही काममें हाथ भी लगा देना चाहिये।"

मनोरमा,—"मैं तय्यार हूं"

जासूस,—"मेरी मर्जीके मुताबिक काम करनेमें तुम्हें कोई उज्र तो नहीं है?"

मनोरमा,—"कुछ भी नहीं।"

जासूस,—"बड़े खतरोंसे तुम्हें सामना करना पड़ेगा, पर मैं हमेशा तुम्हारी पीठपर मुस्तैद रहूंगा और बराबर तुम्हारी रक्षा करता रहूंगा।"

मनोरमा,—"बहुत अच्छ

जासूस,—"तो मैं तुरन्त ही तुम्हारी परीक्षा लिया चाहता हूं।"

मनोरमा,—"मैं मुस्तैद हूं।"

जासूस,—"तो तुम विश्वास दिलाती हो कि धोखा न दोगी?"

मनोरमा,—"नहीं; मेरा विश्वास कीजिये। आप मुझसे कौन काम लिया चाहते हैं?"

जासूस,—"मैं सिर्फ यही चाहता हूं, कि तुम कामिनीकुमार और उसके दोनों जासूसोंको एकबार मुझे दिखा दो।"

इतना सुनते ही मनोरमाका चेहरा जर्द हो गया, पर क्षणभरके बाद उसने कहा,—"अच्छा, मैं दिखा दूंगी।"